P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रेमचंद की कहानियो में दलित चेतना

कुसुम लता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय
देवबन्द, सहारनपुर, उ0 प्र0
भारत

श्वेता संगल
अंशकालिक प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
एस.एम.डी.टी.के.एम.वी.,
सिसौली, मुरादानगर
भारत

Add Aim of the Study and latest Review of Literature till 2016 to 2019

सारांश

प्रेमचंद की कहानियों में दलित चेतना भारतीय साहित्य मे दलित साहित्य जिस रूप से जुडा है, उनसे भारतीय साहित्य को किसी भी रूप मे पृथक नही किया जा सकता दलित साहित्य का इतिहास कोई पुराना नहीं है, यह साहित्य की वह दुःख–ताप और तीक्ष्ण रोष –भरी धारा है जो जीवन के कटु यथार्थ अनुभवों से अनुप्राणित है। दलित चेतना के अन्तर्गत साहित्य की सभी विधाऐं प्रकाश मे आई है, लेकिन सभी विधाओं में कहानी साहित्य का अभूतपूर्व योगदान रहा है। बीसवीं सदी में विशेष तथा स्वातन्त्रयोत्तर भारत मे विगत पॉच सहस्त्र वर्ष से पीढी दर पीढी हाशिऐं पर रखे गये दलित समाज मे सामाजिक परिवर्तन की जो लहर उडी, शोषण के खिलाफ लडने की चिनगारियॉ उठी, आत्मसम्मान के प्रति जो भाव जगा , उसके लिये उन्नीसवी सदी के उत्तरार्ध एवं बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में दलित नेतृत्व सक्रिय था। उसके योगदान की यशगाथा आसमान पर अंकित हो चुकी थी। देखा जाये तो दलित चेतना का बिखराव सभी भाषाओं मे मिलता है, किन्तु सबसे अधिक दलित चेतना का स्वरूप मराठी साहित्य में पाया जाता है। इसी के साथ–साथ हिन्दी में भी साहित्य के विविध रूपों के माध्यम से दलित चेतना विकसित हुई। " बीसवीं सदी के आरम्भ में एक क्षीण और अदृश्य धारा के रूप में उभरा दलित चेतना युक्त साहित्य सदी के अंत तक हिन्दी की एक विस्तृत और क्रान्तिकारी शाखा बन गया,जिसमें कविता ,कहानी, आत्मकथा, संस्मरण, नाटक, आलोचना, आदि सभी विधाऐं शामिल थी।" प्रस्तुत शोध पत्र प्रेमचद की कहानियो में दलित चेतना की व्याख्या करता है।

साथ ही दलित वर्ग के अन्तःकरण में छिपी वेदना एवं आक्रोश को विद्रोही चेतना के रूप में उजागर करता है।

मुख्य शब्द : रोष, वर्ग संघर्ष, विद्रोही चेतना, सन्धि, वर्ण व्यवस्था, आत्म–सम्मान।

प्रस्तावना

आज हिन्दी साहित्य मे 'दलित साहित्य' अपनी एक पूरी पहचान रखता है। दलित साहित्य एक पूरे विशाल अर्थ एंव समुदाय को लेकर चल रहा है। "दलित शब्द हमारे लिऐ एक बहुत ही प्रेरणादायक शब्द है। हम इसे दल के साथ जोडते है, जो सामूहिक तौर पर कार्य करता हैं, जीवन को सामाजिक तरीके से जीता हैं और समाज से अलगाव दूर करता है। इसी के आधार पर हमने 'दलित' शब्द को स्वीकार किया हैं।" जिस साहित्य में मनुष्य समाज की पीडा , दर्द, और कुछ न कर पाने की बेबसी का चित्रण मिलता हैं, वह सब दलित साहित्य हैं। चाहे वह गैर–दलितों द्वारा दलितों के जीवन को लेकर लिखा गया हो। यदि कोई गैर दलित साहित्यकार अपने जीवन की पीडा और संवेदना को एक दलित की तरह व्यक्त करता हैं तो उसे दलित साहित्यकार के बाहर का नही मानना चाहिऐ। इसी सन्दर्भ में दलित कवि, कथाकार 'ओमप्रकाश वाल्मीकि' ने कहा है कि– " रचनाकार मे संवेदनशीलता है और उसकी संवेदनशीलता दलित के साथ हैं और दलित के यथार्थ को वह संवेदनशीलता से प्रस्तुत करता है तो निश्चित रूप से उसके साहित्य को दलित साहित्य माना जायेगा। ऐसी कई कहानियॉ हैं जिनमें दलित यथार्थ जबर्दस्त रूप से मौजूद हैं।" 3 इन साहित्यकारों में प्रेमचंद जी का नाम अग्रगण्य हैं , जिन्होंने गैर दलित होते हुऐ भी दलितों की वेदना को पूर्णरूपेण अभिव्यक्त किया।

प्रेमचंद का आर्विभाव हिन्दी– कहानी युग की एक महत्वपूर्ण घटना थी। सन् 1916 से लेकर सन 1936 तक उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियॉ लिखकर हिन्दी– कहानी की एक निश्चित यथार्थवादी दिशा प्रदान की थी। दूसरी ओर दलित– शोषित वर्ग का मार्मिक चित्रण कर उन्होंने समाज की सभी प्रमुख और गौण समस्याओं को मुखर किया। प्रारम्भ मे उनकी दृष्टि यथार्थोन्मुख आदर्शवाद

की ओर थी। इस तथ्य को उन्होंने अपनी ' प्रेम–प्रसून' की भूमिका में स्वीकार किया हैं। 'डॉ0 गोविन्द त्रिगुणायत' के अनुसार " प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया हैं। वह उनकी आत्मा में से निकला हैं। कोरा दिखावटी नहीं हैं।" मनोवैज्ञानिक आधार लेकर चलने वाली उनकी आदर्शवादी कहानियॉ उनकी कहानी–कला का उत्कृष्ट सौन्दर्य प्रदर्शित करती है।

प्रेमचंद जी का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के निकट लमही ग्राम में हुआ। प्रेमचंद जी ग्रामीण परिवेश में दरिद्रावस्था में पले–बडे साथ ही उन्होंने सौतिहा मॉ के दर्द को भी सहा। अतः उन्होंने जीवन के अभावों और कटुताओं को बहुत ही निकट से देखा व भोगा। जीवन की शुरूआत सरकारी सेवा से हुई तथा अॅग्रेजी दमनचक्र के कई बार शिकार भी हुऐ। अन्तोगत्वा उन्हें सरकारी नौकरी को छोडने पर विवश होना पडा। अॅग्रेजी सरकार की कोप दृष्टि से बचने के लिये इन्होंने अपना लेखन कार्य 'प्रेमचंद' के उपनाम से किया। इनका वास्तविक नाम 'धनपतराय' था।

अपने लेखन की शुरूआत इन्होंने 'ऊर्दू' से 'नवाबराय' के नाम से की इनका 'सोजे वतन' कहानी संग्रह ऊर्दू में निकला जो अॅग्रेज सरकार की ऑखो मे कॉटे की तरह चुभा। अतः सोजे वतन को जब्त कर लिया गया।

हिन्दी में ये बाद में आयें, लेकिन जब आये , तो कथा साहित्य में धूम मचा दी। इन्होंने अपने पात्रों की सजीव और व्यक्तिवपूर्ण रचना की जो कठपुतली की भॉति इनके इशारे पर नही नाचते है, वरन अपने व्यक्तितव के बल पर स्वाभाविक विकास को प्राप्त होते है। प्रेमचंद जी के परिस्थिति– चित्रण बहुत ही वास्तविक्ता लिऐ हुऐ हैं। ग्रामीण दृश्यों का चित्रण अत्यन्त सजीव किया हैं। ये जीवन के तथ्यों को सुलझे हुऐ शब्दों में सूक्ति रूप से रखने मेः सिद्ध हस्त हैं। इन्होंने अपनी करूणाकलित लेखनी द्वारा दीन–दुखियों की मूक वेदना को मुखरित कर लोगो का ध्यान उनकी ओर आकर्षित किया हैं। मुंशी जी ने दलित और निम्न वर्ग के लोगों में भी उत्तम मानवीयता दिखाई हैं। प्रेमचंद जी ने विभिन्न विषयों को अपनी कहानियों का आधार बनाया है, जिनमें विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, कृषक समस्या, शोषण, पददलित एंव उपेक्षित वर्ग आदि हैं। 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' ने प्रेमचंद का मूल्यांकन करते हुऐ लिखा है–" प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे। अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा–आकॉंक्षा, दुःख–सुख और सूझबूझ जानना चाहते हैं, तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।"

प्रेमचंद का कथा शिल्प भी उत्तरोत्तर विकास पथ पर अग्रसर रहा। प्रारम्भिक कहानियों में इतिवृत्तात्मक्ता अधिक हैं तथा चरित्र–चित्रण की मनोवैज्ञानित्क्ता के स्थान पर व्यक्ति के आचरण का वर्णन अधिक किया गया है। 'पंचपरमेश्वर' इसी कोटि की कहानी है।सन् 1930 के बाद की कहानियों में कथानक छोटे एंव संश्लिष्ट होते गये तथा कहानी की मूल संवेदना को उभारने वाली दो–तीन घटनाओं पर ही बल दिया जाने लगा। कहानियों के पात्रों का चरित्रांकन मनोविश्लेषणात्मक पद्धति पर किया जाने लगा और कहानी को चरम सीमा तक द्वन्द्ध एंव समस्या माध्यम से पहुॅचाया गया।' शतरंज के खिलाडी' इसी प्रकार की कहानी है।

प्रेमचंद जी के मानसरोवर मे 300 कहानिंया संग्रहित है जिनमें से कुछ कहानियों के नाम यहॉ दिये जा रहे है– अॅधेर, अनाथ लडकी, अपनी करनी, अमृत, बहपक अलग्योझा , आखिरी तोहफा, आखिरी मंजिल, आत्माराम ,आत्म–संगीत, आधार, आल्हा, ईज्जत का खून, इस्तीफा, ईदगाह, ईश्वरीय न्याय, उद्धार, एक ऑच की कसर, एक्ट्रेस, कप्तान साहब, कर्मों का फल ,क्रिकेट मैच मचंद, कफन, कवच, कातिल, कोई दुःख न हो तो बकरी खरीद लो, कौशल, खुदी, गैरत की कटार, गुल्ली डंडा, घरजमाई, घमण्ड का पुतला, ज्योति, जेल, जुलूस, ठाकुर का कुऑ, झॉकी , तेंतर, त्रिया चरित्र, तांगे वाले की बड, तिरसूल, दण्ड, दुर्गा का मन्दिरचंद, देवी–1 चंद, देवी–2, दूसरी शादी, दिल की रानी, दो सखियॉ, धिक्कार–1, धिक्कार –2, नेउर मचंद, नेकी, नबी का नीति–निर्वाह चंद, नरक का मार्ग, नरौश्य, नैराश्य लीला, नशा, नसीहतों का दफ्तर, नागपूजा, नादान दोस्त, निर्वासन, पंच परमेश्वर, पत्नी से पति, पुत्र प्रेम, पैपुजी, प्रतिशोध, प्रेम– सूत्र, पर्वत–यात्रा, प्रायश्चित, परीक्षा, पूस की रात, बडे घर की बेटी, बडे बाबू, बडे भाई साहब, बन्द दरवाजा, बॉका जमींदार, बेंटो वाली विधवा, बैंक का दिवाला, बोहनी, मैकू मंत्र, मन्दिर और मस्जिद, मनावन, मुबारक बीमारी. ममता, मॉ, माता का ह्रदय मिलाप, मोटे राम जी शास्त्री, स्वर्ग की देवी, राजहठ, रामलीला, राष्ट्र का सेवक, लैला, वफा का खंजर, वासना की कडियॉ, विजय विश्वास, शंखनाद, शूद्र, शराब की दुकान, शान्ति, शादी की वजह, शोक का पुरस्कार, स्त्री और पुरूष, स्वर्ग की देवी, स्वांग, सभ्यता का रहस्य, समर यात्रा, समस्या, सैलानी बंदर, स्वामिनी, सिराफ एक आवाज, सोहाग का शव, सौत ,आदि।

हिन्दी कथा साहित्य को एक विस्तृत आयाम देने वाले प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय संवेदना एंव जीवन के अनुभूत यथार्थ को अभिव्यक्ति मिली है। उन्होंने स्त्रियों के जीवन की अंदुरनी समस्याओं एंव पीडाओं को उजागर किया हैं। साथ ही किसानों की भयावह स्थिति एंव समाज में फैले वर्ग संधर्ष की मूक चेतना को आवाज प्रदान की। प्रेमचंद की रचनायें कल्पना पर आधारित नही है अपितु यथार्थ में लिखी गई जीवंत है।

हिन्दी साहित्य का आदिकाल तो नारी की अवनति के सूचक है। इसके बाद नारी अस्तित्व को सुधारने के प्रयत्न होने लगे। साहित्यकारों ने अपनी कृत्तियों के माध्यम से नारी को जागरूक बनाया, विशेषकर प्रेमचंद की उदार दृ ष्टि उठी और उन्होंने नारी की विवश्ता रूपी जंजीरों को काटने कि प्रयत्न किया तथा उसे जीवन की विशाल दृष्टि प्रदान की। जिस समय नारी चेतना एंव नारी स्वतन्त्रता की बातें हों रही थी। उस समय स्त्रियों की दशा अच्छी न थी। मध्यम व निम्न वर्ग की स्त्रियों को अपनी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता न थी। ऐसे समय में प्रेमचंद ने नारी

समस्या को मुख्य विषय बनाया तथा अपने उपन्यास एंव कहानियों के माध्यम से नारी की दुर्दशा को उजागर किया, जो हिन्दी साहित्य को उनकी अपूर्व देन है। प्रेमचंद ने कहा है कि– "नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास सम्भव नहीं है, उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिऐ तभी समाज उन्नति करेगा।"

प्रेमचंद को बिना किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित एक सजग लेखक के रूप में समझना चाहिये। यद्यपि प्रेमचंद दलित नही है, किन्तु उन्होंने जीवन के अभावों व विद्रूपताओं को बहुत निकट से देखा व भोगा है। उन्होंने दलित यथार्थ को बडी संवेदनशीलता के साथ अपनी कहानियों में उकेरा है।दलित साहित्य का अर्थ केवल प्रतिकार करना भर नहीं हैं। 'सुमित्रा महरौल' ने प्रेमचंद के विषय में कहा है– "प्रायः दलित स्त्रियॉ जाति और पितृसत्ता से पीडित दिखाई देती है। किन्तु प्रेमचंद के यहॉ दलित स्त्रियों में केवल डर, हीनता, ही नही मिलती बल्कि उनमें निर्भीकता भी देखी जा सकती है।" वैभव सिंह ने कहा कि सेवासदन में उनकी जो संवेंदना सवर्ण स्त्रियों के प्रति दिखाई देती है वह आगे चलकर दलित स्त्रियों के प्रति भी देखी जा सकती है।" 'रजनी सिसोदिया' ने कहा है कि प्रेमचंद और हिन्दी दलित आलोचना एक चलता सिक्का है। जिसे हर कोई चलाता आ रहा है ।हिन्दी आलोचना की एक बनाई पद्धति से किसी भी निष्कर्ष पर तुरन्त पहुॅचकर उसे सिद्ध सत्य मान लेना गलत है । उन्होंने 'कफन' कहानी में बुधिया कै प्रसव के दौरान बेखबर और अनुपस्थित स्त्री समाज की मानवीयता पर सवाल उठाया।" 'कवितेन्द्र इंदु' ने कहा– "क्या दलित स्त्रियों का सवाल स्त्रियों के सवाल से हटकर है? दलित स्त्रीवाद और प्रेमचंद में जरूर कुछ समान है तभी दलित स्त्री पर यहॉ बात की जा रही है।"

प्रेमचंद ने नारी को प्रेम शक्ति का विकस माना है । आपके अनुसार नारी जीवन विवाह के पश्चात बदल जाता है। इसलिऐ उन्होंने नारी की वैवाहिक समस्याओं से सम्बन्धित अनेक कहानियॉ लिखी है – सौत, भूल, स्वर्ग की देवी, नया विवाह, सोहाग का शव व मिस पद्मा आदि। उनका विचार है कि– जब पत्नी मर जाऐ तो पुरूष दूसरा विवाह कर लेता है। इसलिऐ नारी को भी पति के मर जाने पर पुनर्विवाह का अधिकार है। इन्होंने विधवा–विवाह से सम्बन्धित धिक्कार, स्वामिन, प्रेम की होली, बालक, ज्योति आदि कहानियॉ लिखी जो प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियॉ भाग–1 में संकलित है। गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार– " प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता तथा नारियों के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है, इनका आदर्शवाद इनकी सहानुभूति का परिणाम है। "मनोवैज्ञानिक आधार लेकर चलने वाला प्रेमचंद का साहित्य, हिन्दी– साहित्य के चरम सौन्दर्य को प्रदर्शित करता है। इस दृष्टि से प्रेमचंद की टक्कर का कलाकार आज तक नही जन्मा है। आपके साहित्य में जहॉ एक ओर युग का सच्चा चित्रण हुआ है, वहीं दूसरी ओर प्रेम, सहानुभूति, तपस्या, सेवा आदि मूल्यों का जोरदार समर्थन उसमें है। स्त्री जीवन में आने वाले कष्टों को सहकर, मैले ,कुचैले, पुराने वस्त्रों को पहनकर, आधे पेट सूखी रोटी खाकर, मजदूरी कर, सब कष्टों को सहकर भी आन्नद से जीवन व्यतीत करती है परन्तु तभी जब उसे समाज में आदर प्राप्त हो, परिवार में प्रतिष्ठा हो। प्रेमचंद ने अनुभव किया कि नारी धन की नही बल्कि प्रेम की भूखी है। प्रेमचंद के साहित्य में धनिकों की स्त्रियॉ, निर्धन स्त्रियों की अपेक्षा रोती दिखाई देती है। यही कारण है कि धनाभाव में, 'ठाकुर का कुऑ' की गंगा, 'पूस की रात 'की मुन्नी, 'सुगामी' की लक्ष्मी, 'अनुभव' की ज्ञानबाबू की पत्नी, 'पास वाली' खी गुलिया, 'चमत्कार' की चम्पा, ' बालक' की गोमती, 'गोदान' की धनिया, आदि कहानियों की पत्नियॉ अपने पति से केवल प्रेम का वरदान प्राप्त कर सुखी जीवन बिताती है।इसके विपरीत 'वैश्य 'की लीला, 'निर्मला' की निर्मला, 'कर्मभूमि' की सुखदा, तथा 'गोदान' की गोविन्दी आदि नारी पति के प्रेम के बिना निराशापूर्ण दुर्भाग्य का जीवन व्यतीत करती है।

प्रेमचंद ने नारी जीवन के विकास के लिऐ जिन दो चीजो को प्रमुखता दी हो उनमें प्रथम नारी शिक्षा व दूसरा स्थान उसके अधिकारों का है। प्रेमचंद के अनुसार– "स्त्री का पूर्ण विकास तभी सम्भव है, जब उसे पुरूषवत् सारे अधिकार प्राप्त हो"

प्रेमचंद के साहित्य में वर्ग चेतना एंव वर्ग संधर्ष के भी दर्शन होते है। मार्क्स ने लिखा भी है कि मनुष्य जाति का सारा इतिहास व्रग संघर्ष का इतिहास है। स्पष्ट ही वर्ण के साथ साथ वर्ग चेतना को नजर अन्दाज करके साहित्य के सामाजिक मूलाधारों की तलाश असंभव है। कथाकार प्रेमचंद पर यदि हम वर्ग चेतना की दृष्टि से विचार करें, तो एक– एक कर सारे वर्गो के चरित्र का खुलासा उनकी प्रतिभा के विकास के क्रम में वहॉ होता दिखाई देगा। प्रारम्भ में जहॉ उन्होंने सामंत वर्ग को केन्द्र में रखा वहीं आगे चलकर साहित्य के केन्द्र में मध्यम वर्ग आ गया तथा अन्तिम चरण की रचनाओं के केन्द्र में समाज के सर्वाधिक दबे – कुचले तबके के लोग है। प्रेमचंद ने आरम्भिक चरण में ऐसी अनेक कहानियॉ लिखी, जिनका सम्बन्ध सामंती समाज के सकरात्मक मूल्यों से है, पर थोडे ही दिनों में उन्हें सामंत वर्ग के पतनशील वर्गीय चरित्र का एहसास हो गया। इसी वजह से आगे चलकर उन्होंने भारतीय सामंत वर्ग के पतन की कहानी लिखनी शुरू कर दी। 'शतरंज के खिलाडी' इसी वर्ग पतन की कहानी है। इसमें कहानीकार ने तदयुगीन सामंतो की विलासिता के परिवेश का नग्न चित्रण करते हुऐ दिखाया है। उसके उपरान्त उन्होंने मध्यम वर्ग को तरजीह दी। यद्यपि उस समय मजदूर वर्ग का उदय हो गया था, किन्तु उन्होंने इस वर्ग के बजाय अॅग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाले तद्युगीन मध्यमवर्ग को अपनी रचनाओं में ज्यादा तरजीह दी। शायद उन्हें ऐसा लगा कि यह शिक्षित वर्ग भारतकय समाज के विकास में कुछ योगदान कर सकता है। प्रेमचंद के 'नमक का दरोगा' कहानी में मुंशी वंशीधर के रूप में आदर्शवादी मूल्यों को स्थापित करने पर डल दिया। किन्तु बेटे के व्यवहारिकता के नाम पर बेइमानी का पाठ पढाते हुऐ वह कहता है कि–" मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चॉद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते–घटते लुप्त हो जाता है, जबकि ऊपरी आमदनी बहता स्त्रोत है, जिससे सदा प्यास बुझती है।"

इसी प्रकार 'नशा' कहानी का नायक जब अपने जमीदार दोस्त के घर आकर कुछ दिनों तक रहता है, तो उस पर भी ज़मीदारी का नशा सवार हो जाता है और अन्ततः अपनी हद को पार कर जाता है।'मंत्र' कहानी में डॉ0 चड्ढा को मानवीय संवेदना से शून्य दिखाया गया है। मौत के मुहॅ में जाते हुऐ सर्पदंश से बेहोश रोगी को देखने व उसका उपचार करने के बजाय अपनी दिनचर्या के अनुसार गोल्फ खेलने चला जाता है। अन्ततः किसान का पुत्र मर जाता हैं।' बेटो वालक विधवा' कहानी में पिता के निधन के बाद सगी बहन के विवाह को लेकर चारों शिक्षित भाईयों का जो नजरिया हैं अपनी मॉ के साथ, जो उनका व्यवहार हैं, वह अमानुषिकता की पराकाष्ठा है। 'सवा सेर गेहूॅ' कहानी का नायक अपने महाजन के खिलाफ केवल इस वजह से आवाज़ नही उठा पाता हैं, क्योकि महाजन ब्राह्मण हैं, जो उसे शाप दे सकता हो। 'मुक्तिमार्ग' कहानी में एक किसान एंव गडेरिया के बीच झगडें का वर्णन करते हुऐ किसान की बुनयादी स्वभावगत् दुर्बलता की मीमांसा प्रेमचंद इन शब्दों में करते हैं–" केले को काटना भी उतना आसान नहीं, जितना किसान से बदला लेना आसान है।उसकी सारी कमाई खेतों या खलिहानों में रहती है। कितनी ही दैविक और भौतिक आपदाओं के बाद कहीं अनाज घर में आता हैं और जो कहीं इन आपदाओं के साथ विद्रोंह ने भी सन्धि कर ली तो बेचारा किसान कहीं का नही रहता।"

भारतीय समाज व्यवस्था और खास तौर से हिन्दू समाज का मूलाधार वर्ण व्यवस्था रही है, जो आज भी कमोबेश सत्य है। डॉ0 अम्बेडकर ने ठीक ही हिन्दू वर्ण व्यवस्था की तुलना एक ऐसी बहुमंजिली गगनचुम्बी इमारत से हैं, जिसमें नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे आवाजाही के लिऐ सीढियॉ नदारद है। रविरंजन के अनुसार –" स्मरणीय है कि दलितों में जो अस्पृश्य तबका है, वह चातुवर्णय व्यवस्था के बाहर है और वह पुरोहिती व्यवस्था का सर्वाधिक दंश झेलने के बावजूद उसकी रूढियॉ , परम्पराओं एंव विशवासों से आक्रांत नही है। भारतीय संदर्भ में यही तबका असली सर्वहारा है, जिसके पास खोने के लिये कुछ भी नही है।"

प्रेमचंद के साहित्य में आये अस्पृश्य पात्र बडे जोरदार व धारदार है। 'कफन' कहानी का नायक अस्पृश्य तबके का है और वे जिस धर्म का मखौल उडाते है, वह ब्राह्मण धर्म है। 'कफन' के घीसू–माधव में श्रम के प्रति अलगाव की भावना है। जिसकी वजह यह बतायी गयी है कि जिस समाज में हाडतोड मेहनत करने वालो की हालत घीसू–माधव से बेहतर न हो, उसमें ऐसी मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई आश्चर्य की बात नही है। इसके विपरीत घीसू माधव कहते है कि जो " धर्म जीवितों को भूखा मारे और मरे हुये को नया कफन दें, वह अमानवीय और परित्याज्य है।"

निष्कर्ष

बहरहाल प्रेमचंद ने छुआछूत की समस्या, दलितों के अधिकारों पर डाका डालने, जमींदारों के जुल्म तथा दलितों के श्रम की महत्ता को उकेरा है। आप ने दलितों के संदर्भ में जो कुछ भी लिखा है, मैं अपने समकालीन साहित्यकारों से आगे बढ़कर लिखा है। आज दलित चेतना के उभार के इस जमाने में भी यदि दलित रचनाकारों की सोच और दृष्टि व्यापक हुई है, तो यह समय और समाज के अनुरूप मूल्यों का विकास है अतः प्रेमचंद साहित्य दलितों का पक्षधर है न कि सामंतों का।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

डॉ मधुसूदन साहाः दलित साहित्य : दशा और दिशा,।
ओमप्रकाश वाल्मीकि से रोहित कौशिक की बातचीत, आजकल पत्रिका, मई 2008, पृष्ठ नंबर 37
रानी कुमारीः शोध छात्रा दिल्ली विश्वविद्यालयके द्वारा प्रेमचंद का साहित्य और दलित स्त्री विषय पर आयोजित संगोष्ठी की रिपोर्ट।
प्रेमचंदः साहित्य का उद्देश्य
विद्यानिवास मिश्रः बहुवचन पत्रिका–स्मृति लेखा, 105 संस्करण 2009
ओम प्रकाश अवस्थीः प्रेमचंद के नारी पात्र
डॉ रामविलास शर्मा– प्रेमचंद और उनका युग
प्रेमचंदः नमक का दरोगा
प्रेमचंदः मुक्ति मार्ग
रवि रंजनः प्रेमचंद के कथा साहित्य का समाजशास्त्र
प्रेमचंदःकफन